-

# प्रेस विज्ञप्ति

रायपुर, दिनांक 1 फरवरी, 2014

## - शासन प्रणाली पहले से अधिक जवाबदेह एवं लोकोन्मुखी - लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार

## - प्रबोधन कार्यक्रम संसदीय प्रक्रियाओं एवं परम्पराओं को समझने का सरल माध्यम है - विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल

## - विधानसभा के गौरव और सम्मान को बनाये रखने की जिम्मेदारी पक्ष एवं प्रतिपक्ष की - मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह

छत्तीसगढ़ विधानसभा सचिवालय में मान. सदस्यों को दो दिवसीय प्रबोधन कार्यक्रम का शुभारम्भ आज विधानसभा परिसर स्थित नये समिति कक्ष में लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार ने किया। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल, मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, संसदीय कार्यमंत्री श्री अजय चन्द्राकर, नेता प्रतिपक्ष श्री टी.एस. सिंहदेव, मान. मंत्रीगण, मान. विधायकगण एवं विधानसभा के प्रमुख सचिव श्री देवेन्द्र वर्मा उपस्थित थे।

लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार ने कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया। इसके पूर्व विधानसभा परिसर पहुँचने पर उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। श्रीमती मीराकुमार ने परेड का निरीक्षण भी किया।

-

प्रबोधन कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार ने कहा कि वे छत्तीसगढ़ विधानसभा में वर्ष 2010 में आयोजित भारत एवं एशिया क्षेत्र के चौथे राष्ट्रमण्डल संसदीय संघ के सम्मेलन में सम्मिलित हुई थी जिसकी स्मृतियां आज भी उनके मन में ताजा हैं। छत्तीसगढ़ भूमि वन, जल, प्रचुर खनिज संपदा और संसाधनों से परिपूर्ण असीम संभावनाओं वाला राज्य है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ विधानसभा के 52 सदस्य पहली बार निर्वाचित हुये हैं जो सभा के कुल सदस्यों का 57.7 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में विधायिका की भूमिका एक ऐसे प्रहरी की है जो यह सुनिश्चित करता है कि सरकार संविधान के अनुसार लोक कल्याण के हित में शासन करे। यह एक सतत् प्रक्रिया है। प्रश्न, ध्यानाकर्षण, स्थगन, बजट पर चर्चा, राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव जैसे प्रक्रियात्मक साधनों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि विधानसभा के सदस्यों को कार्यपालिका को विधायिका के प्रति जवाबदेह बनाने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार ने कहा कि - हमारा अति उत्साह हमें सीमा के बाहर ले जा सकता है जिससे की सभा के कार्य में अवरोध उत्पन्न होता है और इससे लोगों के मन में संसदीय सस्थाओं की आस्था धूमिल होती है। परन्तु छत्तीसगढ़ विधानसभा में जिस मर्यादा और अनुशासन का परिचय देखने को मिलता है वह अनुकरणीय है। उन्होंने

-

कहा कि - अब शासन प्रणाली पहले से अधिक जवाबदेह और लोकोन्मुखी हो गई है जिसमें नागरिकों को जागरूक बनाने पर बल दिया जा रहा है, इसका समाधान पारदर्शी और जिम्मेदार शासन व्यवस्था में निहित है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के मुद्दे पर जनता में व्यापक असंतोष है इसलिए विधायक को अपने दोषरहित आचरण से मापदण्ड स्थापित करना चाहिए और जनता का विश्वास जितना चाहिए।

अपने उद्‌बोधन में विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल ने कहा कि - छत्तीसगढ़ की चतुर्थ विधानसभा में 52 सदस्य प्रथम बार निर्वाचित होकर आये हैं। इस विधानसभा में युवा सदस्यों की संख्या अधिक है तथा छत्तीसगढ़ विधानसभा में पक्ष-प्रतिपक्ष के मध्य सामंजस्य और समन्वयय का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है वह हमारे सहयोगी एं सहिष्णु संस्कारों का जीवंत प्रमाण है।

विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल ने कहा कि - इस प्रबोधन कार्यक्रम का आशय संसदीय शासन प्रणाली में विधायिका के दायित्वों के कुशलता पूर्वक निर्वहन की जानकारियों और संसदीय ज्ञान में अभिवृद्धि से है। विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के कथन को उल्लेखित किया- **"संसद की महानता को संसद के अन्दर होने वाले वाद-विवाद की गुणवत्ता और हमारे द्वारा स्थापित अनुशासन और शालीनता की परम्पराओं से ही प्राप्त होती है और कायम रहती है इसकी महानता को इसके द्वारा अधिनियमित किये गये प्रगतिशील कानूनों और विभिन्न विषयों पर की गई उन सार्थक चर्चाओं द्वारा निर्धारित होती है जिनसे लोगों का लाभ होता है और राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता है"।** उन्होंने कहा कि - श्री बाजपेयी जी के इस चिंतन से ही भारतीय संसदीय लोकतंत्र की गरिमा और सम्मान संवर्धित होगा।

-

मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने मान. सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि - हमें जीवन में रोज कुछ न कुछ सीखने एवं जानने का अवसर मिलता है, उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रबोधन कार्यक्रम में मान. सदस्यों को विधानसभा की नियम एवं प्रक्रिया की एक जानकारी प्राप्त हो जाएगी, जिससे की एक विधायक होने के नाते वे अपनी आवाज को कितनी मुखरता के साथ सभा में रख सकते हैं और यदि मान. सदस्य पूरे समय तक विधानसभा कार्यवाही में सम्मिलित होते हैं तो उन्हें किताब पढ़ने की विशेष आवश्यकता नहीं होगी। छत्तीसगढ़ विधानसभा देश की ऐसी प्रथम विधानसभा है जिसने अपने लिए यह नियम बनाया है कि गर्भगृह में प्रवेश करने पर मान. सदस्य स्वमेव निलम्बित हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि साथ ही यदि सदस्यों को लम्बे समय तक विधानसभा में रहना है तो उन्हें मुखरता एवं सजगता के साथ अपनी बात सभा में उठानी चाहिए, मान. सदस्यों की ये बातें मीडिया के माध्यम से जनता तक जाती है और विधायकों की सकारात्मक बातों का प्रभाव अधिक होता है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ विधानसभा ऐसी पहली विधानसभा है जहां विधानसभा के पक्ष और विपक्ष ने मिलकर विवेकानंद जी की 150वीं जयंती पर उनके लिए कृतज्ञता ज्ञापित की जो स्वामी जी ने इस देश के लिए किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ विधानसभा की इस बात के लिए भी सराहना की कि यहां कोरम के अभाव में कभी सभा की कार्यवाही स्थगित नहीं हुई।

नेता प्रतिपक्ष श्री टी.एस. सिंहदेव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि - जिन मतदातों का प्रतिनिधित्व हम करते हैं उनकी बात को कम से कम समय में अधिक से अधिक कारगर एवं प्रजातांत्रिक तरीकों से रखने का अवसर इस प्रबोधन के माध्यम से हमें सुनिश्चित होगा।

विधानसभा के प्रमुख सचिव श्री देवेन्द्र वर्मा ने कहा कि - हाल ही में जिन चार राज्यों में चुनाव सम्पन्न हुए हैं संभवतः छत्तीसगढ़ विधानसभा प्रथम विधानसभा है जहां पर निर्वाचित सदस्यों के प्रबोधन कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की सर्वोच्च पंचायत में मान. सदस्यों के ऊपर इस प्रदेश के विकास एवं नीतियों को निर्धारित करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। सभा में विभिन्न चर्चाओं के माध्यम से यह सभा प्रदेश को तीव्रतर गति से विकास की राह पर ले जाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल, मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह एवं नेता प्रतिपक्ष श्री टी.एस. सिंहदेव ने लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार का शाल श्रीफल से सम्मान किया एवं उन्हें प्रतीक चिन्ह भी भेंट किया।

-

लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार ने भी विधानसभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल को प्रतीक चिन्ह भेंट किया।

अंत में संसदीय कार्यमंत्री श्री अजय चन्द्राकर ने आभार व्यक्त किया।